अब अपनी मूर्त से हर एक को आत्मिक रूहानी सीरत का अनुभव कराओ

(मीटिंग में आये हुए भाई-बहनों प्रति)

आज बापदादा के पास मीटिंग में आये हुए विशेष भाई-बहनों का, दादियों का याद-प्यार लेते हुए वतन में पहुँची। बापदादा बहुत मीठी दृष्टि से प्रेम के सागर में लहराने का अनुभव करा रहे थे। ऐसे लगा कि जैसे हमारे साथ आप सब भी बापदादा के सामने इमर्ज थे। कुछ समय के बाद बाबा बोले, बच्ची आज मेरे सर्विसएबुल बच्चों का समाचार लाई हो! बापदादा तो चारों ओर के सर्विसएबुल बच्चों को देख-देख हर्षित होते हैं क्योंकि बापदादा के सेवा के साथी विशेष भुजायें हैं। अब तो बापदादा ने सेवाओं की भिन्न-भिन्न विधि सिखला दी है।

बापदादा अब इशारा देते हैं कि मनसा सेवा अपनी श्रेष्ठ स्टेज द्वारा, वाणी की सेवा मधुरता, निर्माणता और रूहानियत द्वारा और कर्मणा में कर्म और योग के बैलेन्स द्वारा, सम्बन्ध-सम्पर्क में सर्व शक्तियों, गुणों की विशेषता द्वारा सेवा करने में ही सहज सफलता है। अब तो इन सब निमित्त सेवाधारी बच्चों को बापदादा इस नज़र से देखते हैं कि जब विश्व परिवर्तन करने की जिम्मेवारी का ताज धारण किया है तो अब समय की, प्रकृति की तीव्र रफ्तार को देख हर एक बच्चे की मूर्त से आत्मिक रूहानी सीरत दिखाई दे। अभी वह झलक चेहरों से दिखाई कम देती है। सेवा करना या प्लैन बनाना तो साधारण मनुष्य भी करते रहते लेकिन बच्चों के चेहरे से वह रूहानियत, अलौकिकता, फरिश्ते पन की स्थिति की भासना दिखाई दे। जैसे सुन्दर चित्र अपने तरफ आकर्षित स्वत: सहज करते, ऐसे बच्चों का

चैतन्य चेहरा सहज अनुभव कराये कि यह न्यारे और प्यारे विशेष आत्मायें हैं। जैसे ब्रह्मा बाप जगदम्बा माँ को देखा। उसकी सहज विधि है कि नॉलेज को धारण करने के साथ-साथ नॉलेज की भिन्न-भिन्न प्वाइंट के अनुभवों के अनुभव में मगन रहें, मनन मूर्त रहें, उसकी आवश्यकता है। अभी नॉलेज की हर प्वाइंट के अनुभवी मूर्त कम दिखाई देते हैं। लेकिन जब अनुभवों में मगन रहेंगे तो स्वत: ही स्व में भी छोटी-छोटी बातों को मिटाने और परिवर्तन करने में सहज होगा, समय नहीं देना पड़ेगा और सेवाकेन्द्र का वातावरण भी शक्तिशाली रहेगा और मनसा सेवा सूरत द्वारा रूहानी सीरत का भी सहज अनुभव होगा। बस अब यही धुन लगी रहे कि विश्व की हर आत्मा को मुक्त बन मुक्त करना ही है। स्वयं को किनारा कर सर्व का सहारा बनना ही है।

ऐसे कहते कुछ समय जैसे बापदादा वतन में थे ही नहीं, कुछ समय के बाद बाबा बोले, बच्ची बापदादा विश्व का चक्कर लगाने गये तो बहुत-बहुत दु:ख-अशान्ति का वातावरण है। सबके मन में क्वेश्चन है अब क्या होगा? लेकिन आप बच्चे खुशखबरी सुनाने वाले हो कि अब स्वर्ण युग आयेगा। ऐसे मिलन मनाते दृष्टि लेते रहे। बापदादा ने सबके लिए बहुत-बहुत याद दी और हर एक के लिए एक सुन्दर चित्र दिया जिसमें वर्ल्ड के गोले पर खड़े हो विश्व को मनसा शक्ति द्वारा शान्ति का वायब्रेशन सकाश दे रहे हैं, जो बहुत सुन्दर चमकता हुआ चित्र था। ऐसे मिलन मनाए हम साकार वतन पहुँच गई।